फोर्टिस, एशियन, मेट्रो अस्पताल...शहर में लूट के नए अड्डे

आपकी हर बीमारी का इलाज ये अस्पताल सिर्फ आईसीयू या सीसीयू में करते हैं

मजदूर मोर्चा ब्यूरो की विशेष रिपोर्ट

फरीदाबाद - फरीदाबाद के तीन अस्पतालों फोर्टिस, एशियन और मेट्रो ने एक सुनियोजित साजिश करके अपने अस्पतालों में इलाज इतना महंगा कर दिया है कि या तो इन अस्पतालों में अमीर इलाज करा सकता है या फिर जिनके पास मेडी क्लेम हो, वो लोग यहां इलाज का साहस जुटा पाते हैं। यह ऐसी साजिश है जिसमें इंश्योरेंस कंपनियां मिली हुई हैं। सारा धंधा इंश्योरेंस कंपनियों की मिलीभगत से चल रहा है।

मामूली वायरल मरीज को इन अस्पतालों में लाए जाने के साथ ही उनसे 20 से 50 हजार रुपये सबसे पहले जमा करा लिए जाते हैं, फिर उनसे पूछा जाता है कि मेडीक्लेम है क्या। इसका जवाब हां आते ही अस्पताल मैनेजमेंट की बांछें खिल जाती हैं। सबसे पहले हर मरीज का एमआरआई कराने का आदेश आता है। एमआरआई की जरूरत नहीं भी हो तो भी एमआरआई कराया जाता है। उसके बाद आधी रात को मरीज के तीमारदार को बताया जाता है कि हालत बिगड़ रही है आईसीयू या सीसीयू में ले जाना पड़ेगा। इन अस्पतालों को सरकार ने जब जमीन दी थी तो इन्होंने वायदा किया था कि वे गरीबों का इलाज कम पैसे में भी करेंगे लेकिन आज हालत यह है कि गरीब इन अस्पतालों की तरफ आंख उठाकर देख भी नहीं सकता है।

हर मर्ज की दवा है आईसीयू या सीसीयू

इस संवाददाता ने देखा कि वायरल मरीज, आंत्रशोथ, मामूली हाथ-पांव के फ्रैक्चर वाले मरीज को आईसीयू में धड़ल्ले से भेजा जा रहा है। एक युवक को पैर में फोड़ा हो गया, उसे भी आईसीयू में भेज दिया गया। जिनके शरीर में सोडियम या पोटैशियम कम है, उनका भी एमआरआई कराया जा रहा है। मरीज असहाय हैं, तीमारदार पढ़े लिखे हैं लेकिन डॉक्टर या इन अस्पतालों के स्टाफ से बहस नहीं कर सकते। कुछ स्टाफ वाले इन चीजों को जानते हैं लेकिन वह बेबसी से देखते हैं। ओपीडी में देखने की फीस 1500 रुपये से लेकर 5000 रुपये तक वसूली जा रही है। आईसीयू में तीमारदारों के जाने की मनाही है या फिर उनके लिए एक निश्चित समय तय है। क्योंकि आईसीयू में भी मरीज को ग्लूकोज की ड्रिप लगी होती है। तीमारदार इन चीजों को नोटिस कर लेता है तो उसके आने के समय ग्लूकोज की ड्रिप हटा दी जाती है। मामूली बीमारी वाले मरीज को भी आईसीयू या सीसीयू में कम से तीन-चार दिन बिताने पड़ते हैं। हजारों रुपये का बेकाम का एक्सरे होना तो आम बात है।

डॉक्टरों के लिए टारगेट

इन अस्पतालों में काम करने वाले डॉक्टरों को टारगेट दिया जाता है। अगर किसी डॉक्टर की सैलरी इनमें से किसी अस्पताल में एक लाख रुपये है तो उसे दस लाख से बीस लाख रुपये के काम का जुगाड़ करके अस्पताल को देना होता है। यानी किसी मरीज का प्रोसिजर (इलाज की प्रक्रिया) अगर डॉक्टर नहीं बढ़ाता जाता है तो वह डॉक्टर उस अस्पताल के लिए बेकार है। जैसे वायरल फीवर वाले मरीज को डराकर एमआरआई करवाना, इसी प्रोसिजर का हिस्सा है। आईसीयू में ले जाने पर दस-दस हजार के नामालूम इंजेक्शन लगाना भी इसी धंधे का हिस्सा है। अगर गलती से किसी मरीज के तीमारदार ने बाहर के जान पहचान वाले डॉक्टर की सेकंड ओपिनियन (दूसरी राय) की बात कह दी तो आईसीयू का वह डॉक्टर साहब या साहिबा आपके मरीज के लिए खलनायक बन जाते हैं। उनका आम जुमला होता है - जब हम लोगों पर विश्वास नहीं है तो यहां लाने की जरूरत क्या थी। तीस साल की उम्र वाले डॉक्टरों को भी यहां विशेषज्ञ बना कर पेश कर दिया जाता है।

डॉक्टरों पर रखी जाती है नजर

इन तमाम अस्पतालों में ऐसे डॉक्टरों पर नजर रखी जाती है, जो किसी भी मरीज से हमदर्दी करते हैं या अलग से कुछ सलाह देने की कोशिश करते हैं। मानवीयता का पहलू हर इंसान में अलग-अलग पाया जाता है, इसी वजह से कुछ डॉक्टर न चाहते हुए भी कभी कभार मरीज से हमदर्दी जता देते हैं। लेकिन इन पर अस्पताल मैनेजमेंट नर्सों, नर्सिंग स्टाफ और सिक्योरिटी गार्ड के जरिए नजर रखता है। डॉक्टर जब वॉर्ड का राउंड लेते हैं तो उस समय भी उनके साथ एक सिक्योरिटी गार्ड चलता है। जिसका काम डॉक्टर की सुरक्षा करना नहीं बल्कि उनकी बातों को गौर से सुनना और उसकी रिपोर्टिंग मैनेजमेंट को देना होता है।

अगर किसी मरीज का तीमारदार अस्पताल को लेकर कोई नेगेटिव बात कहता है तो उसे भी मैनेजमेंट को रिपोर्ट किया जाता है, क्योंकि उस मरीज को लेकर अस्पताल अपनी रणनीति उसी तरह बनाता है। हंगामा करने वाले तीमारदारों की फीडबैक भी मैनेजमेंट लेता है और उसका सामना करने की पूरी तैयारी रहती है।

बाउंसर का क्या काम है अस्पताल में

तमाम अस्पतालों में बाउंसर भी रखे गए हैं या ऐसे तंदुरुस्त लोग भर्ती किए गए हैं जो फरीदाबाद के विभिन्न गांवों के रहने वाले हैं। जिनका काम हंगामा करने वाले या मरीज से मिलने जाते समय तीमारदारों से रोक-टोक करना होता है। ऐसे बाउंसरों की सिक्योरिटी गार्ड की तरह कोई वर्दी नहीं होती है। ये लोग सीधे मैनेजमेंट को रिपोर्ट करते हैं। कई अस्पतालों में डॉक्टर और नर्स तक ऐसे बाउंसरों से डरते हैं। इन्हें खास तौर पर फरीदाबाद के गांवों में बोली जाने वाली भाषा बोलने की हिदायत रहती है ताकि सामने वाला समझ जाए कि वह चौधरी है तो अस्पतालों ने महाचौधरी भर्ती कर रखे हैं।

मेडीक्लेम के नाम पर लूट

अगर किसी मरीज का मेडीक्लेम है तो वायरल बुखार में भी उसका बिल एक लाख तक पहुंच सकता है। मेडीक्लेम चलाने वाली इंश्योरेंस कंपनियों की तमाम अस्पतालों से सांठगांठ है। आपका बिल अगर एक या दो लाख या उससे ज्यादा का बना तो उससे कम का ये कंपनियां पास करेंगी। ये तमाम कंपनियां उस अस्पताल को या उसके डॉक्टरों को अलग-अलग तरीके से फायदा पहुंचाती है। यह गहन जांच का विषय है। वेतन पाने वाला एक कर्मचारी साल में अपनी सैलरी से 20 हजार रुपये मेडीक्लेम के भर रहा है जबकि वह मेडीक्लेम का लाभ कभी-कभार लेता है। आप अंदाजा लगाइए कि इंश्योरेंस कंपनियां किस तरह से कमाई कर रही हैं। हर सरकारी या गैर सरकारी कंपनी में मेडीक्लेम आवश्यक है यानी आपको संबंधित इंश्योरेंस कंपनी को पैसे देने ही पड़ेंगे। उसके बावजूद भी अस्पताल पहुंचते ही मरीज से 20 से 50 हजार रुपये तक की वसूली कर ली जाती है।

धर्म की आड़ यहां भी

इन तमाम अस्पतालों में हर धर्म के डॉक्टर मिल जाएंगे। यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन इसके पीछे एक तय रणनीति काम कर रही है। संबंधित धर्म, समुदाय या जाति वाले मरीज के पास संबंधित डॉक्टर को भेजा जाता है। वह डॉक्टर जुमला इस्तेमाल करता है – आप तो अपने ही हैं। मैंने या अमुक डॉक्टर ने जो प्रोसिजर लिखा है, वह सही है। आप करा लो, आपका फायदा होगा। मेरा क्या है, मैं तो अपको अपना समझ कर बता रहा हूं। धंधे की यह रणनीति इतनी फिट बैठती है कि तीर निशाने पर लगता है। ऐसे डॉक्टर इस तरह के तीमारदारों से दोस्ती गांठ लेते हैं और बाहर दावा करेंगे कि इस-उस अस्पताल में फलां डॉक्टर से उनकी जान-पहचान है। मरीज से पैसे निकलवाने की इस आसान रणनीति पर सभी अस्पताल काम कर रहे हैं।

आईसीयू में सीसीटीवी क्यों नहीं

आखिर सरकार और अदालतें अस्पतालों के आईसीयू में सीसीटीवी लगाने का आदेश क्यों नहीं दे रही हैं। विदेशों में यह व्यवस्था आम है। वहां तीमारदार बाहर बैठकर सीसीटीवी में अपने मरीज को देख सकता है। भारत में सर्जरी के मामलों में यह व्यवस्था है लेकिन उसका भी विडियो ही बनाया जाता है। उसे सीधे दिखाने या स्ट्रीमिंग की सुविधा भारत के किसी अस्पताल ने नहीं दी है। आखिर यह कैसा पर्दा है जिसकी आड़ में मेडिकल बिजनेस को छिपाया जा रहा है। आईसीयू में अगर सीसीटीवी लगा दिए जाएं तो बहुत सारे अस्पतालों की असलियत सामने आ जाएगी। इस मामले को लोगों को अदालत में ले जाना चाहिए। जनता को चाहिए कि वह एक याचिका दायर कर इसकी मांग करे। हम लोग हर चुनाव में वोट तो देते हैं लेकिन अपने जनप्रतिनिधि से अस्पतालों में मुफ्त इलाज की बुनियादी सुविधाएं तक नहीं मांगते। हम लोग यह तक दबाव नहीं बनाते कि तमाम सरकारें स्वास्थ्य और पढ़ाई लिखाई का बजट सबसे कम रखती हैं। पाकिस्तान से युद्ध के नाम पर हमारी सरकार हर साल रक्षा बजट तो बढाती जा रही है लेकिन बुनियादी सुविधाओं के नाम पर उसके पास फर्जी देशभक्ति और राष्ट्रवाद का झुनझुना है।

डॉ प्रदीप अग्रवाल ने खोली पोल

मैं एक डॉक्टर हूं, और इस लिए *"सभी ईमानदार डॉक्टर्स से क्षमा सहित प्रार्थना ...!" *

• .....हार्ट अटैक "हो गया ...

डॉक्टर कहता है - Streptokinase इंजेक्शन ले के आओ ... 9,000/= रु का ... *इंजेक्शन की असली कीमत 700/= - 900/= रु के बीच है .., पर उसपे MRP 9,000/= का है !* आप क्या करेंगे ?

• .....टाइफाइड हो गया ...

डॉक्टर ने लिख दिया - *कुल 14 Monocef लगेंगे ! होल - सेल दाम 25/= रु है ... अस्पताल का केमिस्ट आपको 53/= रु में देता है ...* आप क्या करेंगे??

• .....,,,,किडनी फेल हो गयी है .., *हर तीसरे दिन Dialysis होता है .., Dialysis के बाद एक इंजेक्शन लगता है - MRP शायद 1800 रु है !*

आप सोचते हैं की बाज़ार से होलसेल मार्किट से ले लेता हूँ ! पूरा हिन्दुस्तान आप खोज मारते हैं , कही नहीं मिलता ... क्यों ?

कम्पनी सिर्फ और सिर्फ डॉक्टर को सप्लाई देती है !!

इंजेक्शन की असली कीमत 500/= है , पर डॉक्टर अपने अस्पताल में MRP पे यानि 1,800/= में देता है ... आप क्या करेंगे ??

.....इन्फेक्शन हो गया है .., डॉक्टर ने जो Antibiotic लिखी , वो 540/= रु का एक पत्ता है .., वही Salt किसी दूसरी कम्पनी का 150/= का है और जेनेरिक 45/= रु का ... पर केमिस्ट आपको मना कर देता है .., नहीं जेनेरिक हम रखते ही नहीं , दूसरी कम्पनी की देंगे नहीं .., वही देंगे , जो डॉक्टर साहब ने लिखी है ... यानी 540/= वाली ? आप क्या करेंगे ??

• बाज़ार में *Ultrasound Test 750/= रु में होता है .., चैरिटेबल डिस्पेंसरी 240/= रु में करती है ! 750/= में डॉक्टर का कमीशन 300/= रु है !*

MRI में डॉक्टर का कमीशन Rs. 2,000/= से 3,000/= के बीच है !

डॉक्टर और अस्पतालों की ये लूट , ये नंगा नाच , बेधड़क , बेखौफ़ देश में चल रहा है !

Pharmaceutical कम्पनियों की Lobby इतनी मज़बूत है , की उसने देश को सीधे - सीधे बंधक बना रखा है !

डॉक्टर्स और दवा कम्पनियां मिली हुई हैं ! दोनों सरकार द्वारा पूर्णत: संरक्षित हैं

सबसे बडा यक्ष प्रश्न ...

मीडिया दिन रात क्या दिखाता है ?

गड्ढे में गिरा प्रिंस .., बिना ड्राईवर की कार , राखी सावंत , Bigboss , सास बहू और साजिश , सावधान , क्राइम रिपोर्ट , Cricketer Girl Friend =, ये सब दिखाता है , किंतु ... Doctors , Hospitals और Pharmaceutical company कम्पनियों की , ये खुली लूट क्यों नहीं दिखाता ?

मीडिया नहीं दिखाएगा , तो कौन दिखाएगा ?

मेडिकल Lobby की दादागिरी कैसे रुकेगी ?

इस Lobby ने सरकार को लाचार कर रखा है ?

Media क्यों चुप है ?